Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.10, October,2025

"युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति एवं सामाजिक संस्थाओं की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन"

***मुक्ता वत्स[1]**
शोधार्थी (समाजशास्त्र विभाग)
एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली

डॉ. संतोष कुमार सिंह[2]
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभाग प्रभारी समाजशास्त्र विभाग
एन0एम0एस0एन0 दास (पी0जी0)कालेज बदायूँ

****

Abstract: युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति समकालीन समाज की एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक घटना के रूप में उभरकर सामने आई है। यह प्रवृत्ति केवल व्यक्तिगत असंतोष या मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक संरचना और संस्थागत व्यवस्थाओं से गहराई से जुड़ी हुई है। प्रस्तुत अध्ययन युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति को सामाजिक संस्थाओं की भूमिका के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से परिवार, शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक संस्थाएँ युवाओं के सामाजीकरण, मूल्य-बोध और जीवन-अवसरों के निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं।

अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि सामाजिक संस्थाएँ किस प्रकार युवाओं के दृष्टिकोण, अपेक्षाओं और व्यवहार को प्रभावित करती हैं तथा यह प्रभाव आक्रोश की प्रवृत्ति के विकास में किस रूप में प्रदर्शित होता है। यह शोध नियमहीनता, तनाव तथा अलगाव जैसी समाजशास्त्रीय अवधारणाओं के आधार पर संस्थागत भूमिका और युवा आक्रोश के बीच संबंधों की व्याख्या करता है। प्रस्तुत अध्ययन युवाओं की आक्रोश की प्रवृत्ति को एक व्यापक सामाजिक-संरचनात्मक संदर्भ में स्थापित करते हुए नीति-निर्माताओं और शिक्षाविदों के लिए उपयोगी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

यह शोध न केवल युवाओं की समस्या को एक व्यक्तिगत या मनोवैज्ञानिक मुद्दे के रूप में देखने के बजाय उसे व्यापक सामाजिक-संरचनात्मक संदर्भ में प्रस्तुत करता है, बल्कि सामाजिक संस्थाओं के पुनर्गठन और सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है। अध्ययन के निष्कर्ष नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों तथा समाजशास्त्रियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं, क्योंकि यह युवाओं में बढ़ते आक्रोश को समझने और उसे सकारात्मक सामाजिक दिशा देने के लिए एक विश्लेषणात्मक आधार प्रदान करता है।

Keywords: ***युवा आक्रोश की प्रवृत्ति, सामाजिक विघटन, संस्थागत विफलता, सामाजिक असंतोष***

****

1. प्रस्तावना

समकालीन समाज तीव्र सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है, जिसका प्रभाव समाज के सभी वर्गों पर पड़ रहा है। विशेष रूप से युवा वर्ग इन परिवर्तनों से सर्वाधिक प्रभावित समूह के रूप में उभरकर सामने आया है। शिक्षा, रोजगार, पारिवारिक संरचना, राजनीतिक सहभागिता और सामाजिक मूल्यों में हो रहे बदलावों ने युवाओं की आकांक्षाओं, अपेक्षाओं और जीवन-लक्ष्यों को नए सिरे से परिभाषित किया है। इन परिवर्तनों के बीच युवाओं में बढ़ती आक्रोश की प्रवृत्ति एक गंभीर सामाजिक चिंता का विषय बन गई है, जो केवल व्यक्तिगत असंतुलन तक सीमित न रहकर व्यापक सामाजिक संरचनाओं से जुड़ी हुई दिखाई देती है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से युवा आक्रोश को केवल भावनात्मक या मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। यह प्रवृत्ति सामाजिक परिस्थितियों, संस्थागत व्यवस्थाओं और संरचनात्मक असमानताओं का परिणाम भी हो सकती है। परिवार, शिक्षा, रोजगार और

राजनीति जैसी सामाजिक संस्थाएँ युवाओं के सामाजीकरण, मूल्य-बोध और सामाजिक समायोजन की प्रक्रिया में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। जब ये संस्थाएँ युवाओं को सुरक्षा, अवसर और मार्गदर्शन प्रदान करने में असफल होती हैं, तो इससे उनके भीतर निराशा, असंतोष और अंततः आक्रोश की भावना विकसित होती है।

वर्तमान सामाजिक संदर्भ में यह देखा जा रहा है कि शिक्षा प्रणाली रोजगारोन्मुखी अपेक्षाओं को पूर्ण रूप से पूरा नहीं कर पा रही है, श्रम बाजार में अवसर सीमित होते जा रहे हैं, पारिवारिक संबंधों में संवाद और समर्थन की कमी महसूस की जा रही है तथा राजनीतिक संस्थाओं के प्रति युवाओं का विश्वास लगातार कमजोर हो रहा है। ऐसी परिस्थितियाँ युवाओं को सामाजिक व्यवस्था से अलगाव और मोहभंग की स्थिति में ले जाती हैं, जिसका प्रतिफल आक्रोशपूर्ण व्यवहार, असहिष्णुता और कभी-कभी हिंसक प्रतिक्रियाओं के रूप में सामने आता है।

यह अध्ययन युवाओं में बढ़ती आक्रोश की प्रवृत्ति को सामाजिक संस्थाओं की विफलता के व्यापक समाजशास्त्रीय संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। शोध का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि किस प्रकार सामाजिक संस्थाओं की संरचनात्मक एवं कार्यात्मक कमियाँ युवाओं के असंतोष और आक्रोश को जन्म देती हैं। यह अध्ययन न केवल युवा आक्रोश की सामाजिक जड़ों को स्पष्ट करने का प्रयास करता है, बल्कि सामाजिक संस्थाओं की भूमिका और उनके सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता पर भी प्रकाश डालता है, ताकि युवाओं को सकारात्मक सामाजिक दिशा प्रदान की जा सके।

2. साहित्य समीक्षा

युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति के अध्ययन से संबंधित समाजशास्त्रीय साहित्य यह दर्शाता है कि यह परिघटना आधुनिक समाज में उभरते संरचनात्मक और संस्थागत परिवर्तनों से गहराई से जुड़ी हुई है। विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोणों और अनुभवजन्य अध्ययनों ने यह स्पष्ट किया है कि युवाओं का आक्रोश केवल व्यक्तिगत असंतोष या मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया का परिणाम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना के भीतर विद्यमान असमानताओं, संस्थागत व्यवस्थाओं की कार्यात्मक कमजोरियों तथा तीव्र सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं से उत्पन्न होता है। परिवार, शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक संस्थाओं के बदलते स्वरूप ने युवाओं के सामाजीकरण, अवसरों और भविष्य संबंधी अपेक्षाओं को प्रभावित किया है, जिसके परिणामस्वरूप असंतुलन और मोहभंग की स्थिति विकसित होती है। उपलब्ध साहित्य इस बात की ओर संकेत करता है कि युवा आक्रोश को समझने के लिए एक व्यापक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण आवश्यक है, जिसमें सामाजिक संस्थाओं की भूमिका और उनके अंतर्संबंधों का विश्लेषण केंद्रीय महत्व रखता हो।

2.1 युवाओं में आक्रोश एवं असंतोष पर पूर्व अध्ययन

युवाओं के आक्रोश और असंतोष को समझने में दुर्खीम (1897) का एनोमी(नियमहीनता) सिद्धांत एक आधारभूत समाजशास्त्रीय ढाँचा प्रदान करता है। दुर्खीम के अनुसार, जब समाज में मानदंडों और मूल्यों का क्षरण होता है, तब व्यक्ति विशेषकर युवा वर्ग दिशाहीनता, असंतोष और तनाव की स्थिति में पहुँच जाता है। यह स्थिति आक्रोश, विद्रोह और सामाजिक अव्यवस्था को जन्म देती है। आधुनिक समाज में तीव्र सामाजिक परिवर्तन के कारण युवाओं में ऐसी एनोमिक परिस्थितियाँ अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

इसी क्रम में मर्टन (1938) ने तनाव सिद्धांत के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि सामाजिक रूप से स्वीकृत लक्ष्यों और उन्हें प्राप्त करने के वैध साधनों के बीच असंतुलन युवाओं में तनाव और असंतोष को उत्पन्न करता है। जब शिक्षा और सामाजिक संरचना युवाओं को सफलता के सपने तो दिखाती है, परंतु रोजगार और सामाजिक अवसर उपलब्ध नहीं कराती, तब यह तनाव आक्रोशपूर्ण व्यवहार में परिवर्तित हो जाता है।

भारतीय संदर्भ में युवाओं के असंतोष को सामाजिक-मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास पांडे और सिंह (2005) ने किया है। उनके अनुसार, सामाजिक असमानता, अपेक्षाओं का दबाव और संस्थागत समर्थन की कमी युवाओं में निराशा और आक्रोश को जन्म देती है। यह आक्रोश केवल व्यक्तिगत भावना न होकर सामाजिक जड़ों से जुड़ा हुआ है।

2.2 सामाजिक संस्थाओं पर केंद्रित अध्ययन: परिवार, शिक्षा, रोजगार और राजनीति

सामाजिक संस्थाओं की भूमिका को समझने में पार्सन्स (2013) का संरचनात्मक-कार्यात्मक दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है। पार्सन्स के अनुसार, परिवार, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और राजनीति जैसी संस्थाएँ समाज की स्थिरता और संतुलन बनाए रखने का कार्य करती हैं। जब ये संस्थाएँ अपने कार्यों का समुचित निर्वहन नहीं कर पातीं, तो समाज में असंतुलन और विघटन की स्थिति उत्पन्न होती है, जिसका प्रभाव युवाओं पर विशेष रूप से पड़ता है।

परिवार संस्था पर किए गए अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि पारंपरिक पारिवारिक संरचनाओं के क्षरण, संवाद की कमी और आर्थिक दबावों ने युवाओं को भावनात्मक रूप से असुरक्षित बना दिया है। आधुनिक समाज में पारिवारिक समर्थन के कमजोर होने से युवाओं में आक्रोश और असंतोष की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

शिक्षा संस्था के संदर्भ में बोर्डियू (1986) ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि शिक्षा प्रणाली सामाजिक असमानताओं को कम करने के बजाय कई बार उन्हें पुनः उत्पन्न करती है। सांस्कृतिक पूँजी की असमान उपलब्धता के कारण वंचित वर्गों के युवा स्वयं को हाशिए पर महसूस करते हैं, जिससे उनमें असंतोष और आक्रोश विकसित होता है।

आर्थिक और रोजगार संबंधी संस्थाओं को समझने के लिए मार्क्स (1844) की अलगाव की अवधारणा अत्यंत प्रासंगिक है। मार्क्स के अनुसार, पूँजीवादी समाज में व्यक्ति अपने श्रम, समाज और स्वयं से अलगाव का अनुभव करता है। यह अलगाव युवाओं में सामाजिक असंतोष और आक्रोश को जन्म देता है, विशेषकर तब जब रोजगार अस्थिर और अनिश्चित हो।

आधुनिक समाज में जोखिम और अनिश्चितता के संदर्भ में बेक (1992) ने 'जोखिम समाज' की अवधारणा प्रस्तुत की है। उनके अनुसार, आधुनिक सामाजिक संरचनाएँ युवाओं को भविष्य के प्रति असुरक्षित बनाती हैं, जिससे उनमें भय, असंतोष और आक्रोश की भावना पनपती है।

राजनीतिक संस्थाओं और सामाजिक सहभागिता के संदर्भ में पुटनम (2000) ने सामाजिक पूँजी के क्षरण को सामाजिक असंतोष का एक प्रमुख कारण माना है। जब युवाओं का राजनीतिक संस्थाओं पर विश्वास कम होता है और सहभागिता के अवसर सीमित हो जाते हैं, तो उनमें मोहभंग और आक्रोश विकसित होता है।

आधुनिक सामाजिक सिद्धांतों के संदर्भ में टक़र (1998) ने गिडेंस के विचारों को प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट किया कि आधुनिकता और आत्म-पहचान के संकट ने युवाओं को अस्थिर और असंतुष्ट बनाया है। यह पहचान-संकट भी आक्रोश की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है।

बेटील (2002) ने सामाजिक संरचनाओं, संस्थाओं और असमानताओं के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया है कि समाज की विभिन्न संस्थाएँ जैसे परिवार, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और राजनीति आदि आपस में गहराई से जुड़ी होती हैं और इनकी कार्यप्रणाली सामाजिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब ये संस्थाएँ अपने उद्देश्यों की पूर्ति में विफल हो जाती हैं या इनमें असमानता, पक्षपात और अवसरों की कमी जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, तब सामाजिक तनाव और असंतोष बढ़ने लगता है। इसका प्रभाव विशेष रूप से युवाओं पर अधिक पड़ता है, क्योंकि वे जीवन के संक्रमणकालीन चरण में होते हैं और अपनी पहचान, अवसरों तथा भविष्य को लेकर संवेदनशील रहते हैं। परिणामस्वरूप संस्थागत विफलताओं के कारण युवाओं में निराशा, असुरक्षा, असंतोष तथा कभी-कभी सामाजिक विचलन जैसी प्रवृत्तियाँ भी विकसित हो सकती हैं, जो व्यापक सामाजिक स्थिरता को प्रभावित करती हैं।

2.3 शोध-अंतराल

पूर्ववर्ती समाजशास्त्रीय अध्ययनों ने युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति और सामाजिक संस्थाओं की भूमिका पर उपयोगी अंतर्दृष्टि प्रदान की है, तथापि इन अध्ययनों में कुछ महत्त्वपूर्ण सीमाएँ विद्यमान हैं, जिनके कारण आगे गहन अनुसंधान की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

1. अधिकांश अध्ययनों में युवाओं के आक्रोश को व्यक्तिगत या मनोवैज्ञानिक समस्या के रूप में देखा गया है, जबकि इसके सामाजिक-

संरचनात्मक और संस्थागत कारणों पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया है।

2. उपलब्ध साहित्य में सामाजिक संस्थाओं—विशेषकर परिवार, शिक्षा, रोजगार और राजनीति का अध्ययन प्रायः अलग-अलग किया गया है; इन संस्थाओं की संयुक्त विफलता और उसके प्रभावों का समग्र विश्लेषण सीमित रहा है।
3. कई अध्ययन सैद्धांतिक स्तर पर युवाओं के असंतोष की व्याख्या करते हैं, किंतु अनुभवजन्य साक्ष्यों के माध्यम से संस्थागत विफलता और आक्रोश की प्रवृत्ति के प्रत्यक्ष संबंध को स्पष्ट नहीं कर पाते।
4. भारतीय संदर्भ में अधिकांश शोध सामान्य निष्कर्षों तक सीमित हैं और स्थानीय सामाजिक संदर्भों में युवाओं की आक्रोश की प्रवृत्ति को पर्याप्त रूप से नहीं समझते।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति के सामाजिक कारणों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना।
2. परिवार, शिक्षा, रोजगार एवं राजनीतिक संस्थाओं की भूमिका का अध्ययन करना।
3. सामाजिक संस्थाओं की भूमिका और युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति के बीच संबंध की जाँच करना।
4. यह समझना कि सामाजिक संस्थाएँ किस प्रकार युवाओं के असंतोष एवं व्यवहार को प्रभावित करती हैं।
5. युवाओं की आक्रोश की प्रवृत्ति को एक सामाजिक-संरचनात्मक घटना के रूप में व्याख्यायित करना।

4. अनुसंधान परिकल्पनाएँ

1. **H_1:** सामाजिक संस्थाओं की भूमिका और युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति के बीच महत्वपूर्ण संबंध विद्यमान है।
2. **H_2:** परिवार संस्था की भूमिका युवाओं की आक्रोश की प्रवृत्ति को प्रभावित करती है।
3. **H_3:** शिक्षा एवं रोजगार संस्थाओं की भूमिका युवाओं में असंतोष और आक्रोश को प्रभावित करती है।
4. **H_4:** राजनीतिक संस्थाओं के प्रति युवाओं की धारणा उनकी आक्रोश की प्रवृत्ति को प्रभावित करती है।
5. **H_5:** सामाजिक संस्थाओं की संयुक्त भूमिका युवाओं की आक्रोश की प्रवृत्ति की तीव्रता को निर्धारित करती है।

6. वैचारिक ढाँचा

आकृति 1 : युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति एवं सामाजिक संस्थाओं की भूमिका का वैचारिक ढाँचा

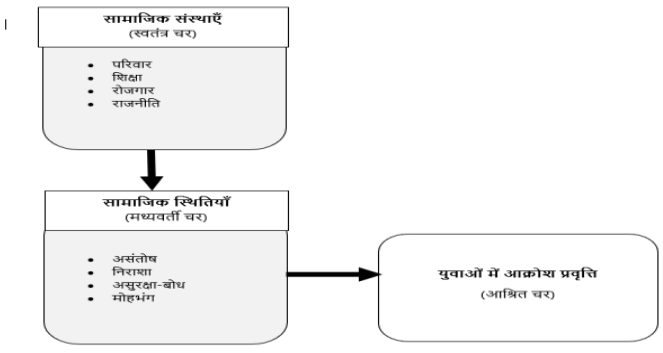

स्रोत : साहित्य समीक्षा एवं शोधकर्ता की संकल्पना पर आधारित

प्रस्तुत वैचारिक ढाँचा युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति को सामाजिक संस्थाओं की भूमिका के व्यापक समाजशास्त्रीय संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। यह ढाँचा इस मान्यता पर आधारित है कि परिवार, शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक संस्थाएँ युवाओं के सामाजीकरण, मूल्य-निर्माण तथा जीवन-अवसरों के निर्धारण में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। जब इन संस्थाओं की भूमिका युवाओं की अपेक्षाओं और सामाजिक वास्तविकताओं के अनुरूप नहीं होती, तब सामाजिक असंतोष, निराशा, असुरक्षा-बोध और मोहभंग जैसी मध्यवर्ती सामाजिक स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं, जो अंततः आक्रोश की प्रवृत्ति के रूप में अभिव्यक्त होती हैं।

यह वैचारिक ढाँचा दुर्खीम के नियमहीनता सिद्धांत से सैद्धांतिक समर्थन प्राप्त करता है, जिसके अनुसार सामाजिक मानदंडों की कमजोरी और संस्थागत दिशाहीनता व्यक्ति को असंतुलन और तनाव की स्थिति में ले जाती है, जिसका प्रभाव युवाओं में आक्रोश के रूप में दिखाई देता है । इसी प्रकार, मर्टन का तनाव सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक रूप से स्वीकृत लक्ष्यों और उन्हें प्राप्त करने के वैध साधनों के बीच असंतुलन युवाओं में तनाव और निराशा को जन्म देता है, जो आक्रोश की प्रवृत्ति को प्रबल बनाता है ।

इसके अतिरिक्त, मार्क्स की अलगाव की अवधारणा इस ढाँचे को और सुदृढ़ करती है, क्योंकि रोजगार और राजनीतिक संस्थाओं से जुड़ा सामाजिक अलगाव युवाओं में समाज के प्रतिभाव और मोहभंग को जन्म देता है, जिससे आक्रोश एक सामाजिक प्रतिक्रिया के रूप में विकसित होता है । इस प्रकार, प्रस्तुत वैचारिक ढाँचा युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति को केवल व्यक्तिगत या मनोवैज्ञानिक समस्या न मानकर, सामाजिक संस्थाओं की भूमिका, संरचनात्मक तनाव और सामाजिक अलगाव के संयुक्त प्रभाव के रूप में व्याख्यायित करता है।

6. अनुसंधान पद्धति (Research Methodology)

6.1 शोध की प्रकृति (Nature of the Study)

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। इस अध्ययन में युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति तथा सामाजिक संस्थाओं की भूमिका के बीच संबंधों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया गया है। शोध का उद्देश्य सामाजिक तथ्यों की व्याख्या करने के साथ-साथ उनके पारस्परिक संबंधों को समझना है, जिससे युवाओं के व्यवहार को व्यापक सामाजिक-संरचनात्मक संदर्भ में स्पष्ट किया जा सके।

6.2 अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र जनपद मुज़फ्फरनगर, उत्तर प्रदेश है। इस क्षेत्र का चयन इसलिए किया गया है क्योंकि यहाँ सामाजिक संरचना में तीव्र परिवर्तन, युवा जनसंख्या की पर्याप्त उपलब्धता तथा परिवार, शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक संस्थाओं की सक्रिय भूमिका स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। मुज़फ्फरनगर जनपद सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विविधता का प्रतिनिधित्व करता है, जो युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति के समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए उपयुक्त क्षेत्र प्रदान करता है।

6.3 अध्ययन की जनसंख्या एवं नमूना

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या में 18 से 35 वर्ष आयु वर्ग के युवा सम्मिलित किए गए हैं। नमूना चयन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण (Stratified Random Sampling) पद्धति का प्रयोग किया गया है, ताकि विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, शैक्षिक स्तर तथा रोजगार स्थिति वाले युवाओं का समुचित और संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके। अध्ययन के लिए कुल 150 युवाओं का नमूना आकार निर्धारित किया गया है। यह नमूना आकार अध्ययन की व्यवहारिकता, उपलब्ध संसाधनों तथा सांख्यिकीय विश्वसनीयता को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त माना गया है और यह अध्ययन के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं की प्रभावी जाँच के लिए पर्याप्त है।

6.4 आकड़ा संग्रह की विधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के संग्रह हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़ों का संग्रह मुख्यतः संरचित प्रश्नावली के माध्यम से किया गया, जिसके साथ चयनित युवाओं से अनौपचारिक साक्षात्कार भी किए गए, ताकि उनके सामाजिक अनुभवों और दृष्टिकोणों को बेहतर ढंग से

समझा जा सके। प्रश्नावली में सामाजिक संस्थाओं की भूमिका, युवाओं के सामाजिक अनुभव, असंतोष एवं निराशा की भावना तथा आक्रोश की प्रवृत्ति से संबंधित प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त, द्वितीयक आँकड़ों का संग्रह विषय से संबंधित पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं एवं प्रकाशित शोध लेखों से किया गया, जिनके माध्यम से अध्ययन के सैद्धांतिक आधार को सुदृढ़ किया गया तथा शोध समस्या को व्यापक समाजशास्त्रीय संदर्भ में समझने में सहायता प्राप्त हुई।सरकारी एवं संस्थागत रिपोर्टों

7. आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

संग्रहित आँकड़ों का विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय एवं व्याख्यात्मक विधियों के माध्यम से किया गया है। प्रारंभिक स्तर पर आँकड़ों को सुव्यवस्थित एवं समझने योग्य बनाने के लिए आवृत्ति एवं प्रतिशत विश्लेषण का प्रयोग किया गया है। सामाजिक संस्थाओं की भूमिका और युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति के बीच संबंधों की जाँच हेतु सहसंबंध विश्लेषण (Correlation Analysis) अपनाया गया है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न समूहों एवं चरों के मध्य अंतर एवं समानताओं को स्पष्ट करने के लिए तुलनात्मक विश्लेषण का उपयोग किया गया है। इन विश्लेषण तकनीकों के माध्यम से अध्ययन की परिकल्पनाओं की जाँच की गई है तथा सामाजिक संस्थाओं की भूमिका और युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति के अंतर्संबंधों को स्पष्ट किया गया है।

7.1. जनसांख्यिकीय विवरण

तालिका 2: उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय विवरण

चर Variable	श्रेणी Category	संख्या N	प्रतिशत (%)
लिंग	पुरुष	88	58.7
	महिला	62	41.3
आयु (वर्ष)	18–22	45	30.0
	23–27	56	37.3
	28–35	49	32.7
शैक्षिक स्तर	माध्यमिकइंटरमीडिएट/	34	22.7
	स्नातक	71	47.3
	स्नातकोत्तर	45	30.0
रोजगार स्थिति	छात्र	52	34.7
	बेरोजगार	41	27.3
	नियोजित (सरकारी/निजी)	57	38.0
निवास क्षेत्र	शहरी	83	55.3
	ग्रामीण	67	44.7
पारिवारिक प्रकार	संयुक्त परिवार	68	45.3
	एकल परिवार	82	54.7

तालिका 1 उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल को प्रदर्शित करती है। लिंग के आधार पर देखा जाए तो अध्ययन में कुल 150 उत्तरदाताओं में से 88 (58.7 प्रतिशत) पुरुष तथा 62 (41.3 प्रतिशत) महिलाएँ सम्मिलित हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में दोनों लिंगों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व किया गया है। आयु-वर्ग के

अनुसार, 23–27 वर्ष आयु समूह के युवाओं की संख्या सर्वाधिक है (37.3 प्रतिशत), इसके बाद 28–35 वर्ष आयु समूह (32.7 प्रतिशत) तथा 18–22 वर्ष आयु समूह (30.0 प्रतिशत) का स्थान आता है। यह वितरण अध्ययन को विभिन्न आयु स्तरों के युवाओं के दृष्टिकोण को समझने में सहायक बनाता है।

शैक्षिक स्तर के संदर्भ में, स्नातक स्तर के उत्तरदाताओं की संख्या सर्वाधिक (47.3 प्रतिशत) पाई गई, जबकि स्नातकोत्तर स्तर के युवा 30.0 प्रतिशत तथा माध्यमिक/इंटरमीडिएट स्तर के युवा 22.7 प्रतिशत हैं। यह दर्शाता है कि अध्ययन में शिक्षित युवाओं की भागीदारी अपेक्षाकृत अधिक है, जो सामाजिक संस्थाओं और आक्रोश की प्रवृत्ति के बीच संबंधों को समझने के लिए उपयुक्त मानी जा सकती है। रोजगार स्थिति के अनुसार, 38.0 प्रतिशत उत्तरदाता नियोजित (सरकारी अथवा निजी) हैं, 34.7 प्रतिशत छात्र हैं, जबकि 27.3 प्रतिशत बेरोजगार हैं। यह विविधता युवाओं की आक्रोश की प्रवृत्ति पर रोजगार की स्थिति के प्रभाव को विश्लेषित करने के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है।

निवास क्षेत्र के आधार पर, 55.3 प्रतिशत उत्तरदाता शहरी क्षेत्र से तथा 44.7 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र से संबंधित हैं, जिससे अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण युवाओं का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित होता है। पारिवारिक प्रकार के अनुसार, 54.7 प्रतिशत उत्तरदाता एकल परिवारों से तथा 45.3 प्रतिशत संयुक्त परिवारों से हैं। यह वितरण पारिवारिक संरचना और युवाओं की आक्रोश की प्रवृत्ति के बीच संबंधों को समझने में सहायक सिद्ध होता है। कुल मिलाकर, तालिका 1 यह दर्शाती है कि अध्ययन का नमूना सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक विविधता को समाहित करता है, जिससे शोध निष्कर्षों की विश्वसनीयता और प्रासंगिकता में वृद्धि होती है।

7.2 परिकल्पनाओं की जाँच एवं परिणाम

1. (H_1) सामाजिक संस्थाओं की भूमिका और युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति के बीच संबंध

तालिका 7.1 : सामाजिक संस्थाओं की भूमिका एवं आक्रोश की प्रवृत्ति के बीच सहसंबंध

चर	N	Pearson r	Sig. (p-value)
सामाजिक संस्थाओं की भूमिका ↔ आक्रोश की प्रवृत्ति	150	0.412	0.000

तालिका 7.1 से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक संस्थाओं की भूमिका और युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति के बीच मध्यम स्तर का सकारात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध विद्यमान है ($r = 0.412$, $p < 0.01$)। इसका तात्पर्य यह है कि जैसे-जैसे सामाजिक संस्थाओं की भूमिका में परिवर्तन अथवा कमजोरी आती है, वैसे-वैसे युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति की तीव्रता में भी वृद्धि होती है। यह परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करता है कि युवाओं का आक्रोश केवल व्यक्तिगत कारणों का परिणाम नहीं है, बल्कि वह सामाजिक संस्थाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। अतः H_1 स्वीकार की जाती है।

2. (H_2) परिवार संस्था की भूमिका और युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति

तालिका 7.2 : परिवार संस्था एवं आक्रोश की प्रवृत्ति के बीच सहसंबंध

चर	N	Pearson r	Sig.
परिवार संस्था ↔ आक्रोश की प्रवृत्ति	150	0.365	0.001

तालिका 7.2 के अनुसार परिवार संस्था की भूमिका और युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति के बीच सकारात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध पाया गया है ($r = 0.365$, $p < 0.01$)। यह दर्शाता है कि पारिवारिक समर्थन, संवाद की कमी अथवा पारिवारिक संरचना में परिवर्तन युवाओं में असंतोष और आक्रोश को प्रभावित करता है। यह निष्कर्ष परिवार को युवाओं के सामाजिकरण की एक महत्वपूर्ण संस्था के रूप में स्थापित करता है। अतः H_2 स्वीकार की जाती है।

3. (H_3) शिक्षा एवं रोजगार संस्थाओं की भूमिका और युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति

तालिका 7.3 : शिक्षा-रोजगार संस्थाएँ एवं आक्रोश की प्रवृत्ति

चर	N	Pearson r	Sig.
शिक्षा एवं रोजगार ↔ आक्रोश प्रवृत्ति	150	0.528	0.000

तालिका 7.3 से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा एवं रोजगार संस्थाओं की भूमिका और युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति के बीच उच्च स्तर का सकारात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण संबंध पाया गया है ($r = 0.528$, $p < 0.01$)। यह संकेत करता है कि शिक्षा प्रणाली और रोजगार अवसरों के बीच असंतुलन युवाओं में तनाव, निराशा और आक्रोश को तीव्र करता है। यह निष्कर्ष स्ट्रेन सिद्धांत तथा एलियनेशन की अवधारणा के अनुरूप है। अतः H_3 दृढ़ रूप से स्वीकार की जाती है।

4. (H_4) राजनीतिक संस्थाओं के प्रति धारणा और युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति

तालिका 7.4 : राजनीतिक संस्थाएँ एवं आक्रोश की प्रवृत्ति

चर	N	Pearson r	Sig.
राजनीतिक संस्थाएँ ↔ आक्रोश की प्रवृत्ति	150	0.287	0.004

तालिका 7.4 के अनुसार राजनीतिक संस्थाओं के प्रति युवाओं की धारणा और आक्रोश की प्रवृत्ति के बीच कम से मध्यम स्तर का किंतु सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध पाया गया है ($r = 0.287$, $p < 0.01$)। यह दर्शाता है कि राजनीतिक संस्थाओं के प्रति विश्वास में कमी युवाओं के आक्रोश को प्रभावित करती है, यद्यपि इसका प्रभाव परिवार तथा शिक्षा-रोजगार संस्थाओं की तुलना में अपेक्षाकृत कम है। अतः H_4 स्वीकार की जाती है।

5. (H_5) सामाजिक संस्थाओं की संयुक्त भूमिका और युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति

तालिका 7.5 : सामाजिक संस्थाओं की संयुक्त भूमिका

Model	R	R^2	F-value	Sig.
संयुक्त संस्थागत मॉडल	0.611	0.373	21.84	0.000

प्रतिगमन विश्लेषण के परिणाम दर्शाते हैं कि सामाजिक संस्थाएँ संयुक्त रूप से युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति की 37.3 प्रतिशत व्याख्या करती हैं ($R^2 = 0.373$)। प्राप्त F-value सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है ($p < 0.01$), जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रतिगमन मॉडल उपयुक्त एवं विश्वसनीय है। यह निष्कर्ष इस तथ्य की पुष्टि करता है कि सामाजिक संस्थाओं का सामूहिक प्रभाव

युवाओं के आक्रोश को समझने में निर्णायक भूमिका निभाता है। अतः H_5 स्वीकार की जाती है।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति को सामाजिक संस्थाओं की भूमिका के संदर्भ में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझना था। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति केवल व्यक्तिगत या मनोवैज्ञानिक कारणों का परिणाम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना और संस्थागत व्यवस्थाओं से गहराई से जुड़ी हुई है। परिवार, शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक संस्थाएँ युवाओं के सामाजी करण, अपेक्षाओं और व्यवहार को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, और इन संस्थाओं की भूमिका में उत्पन्न असंतुलन युवाओं में असंतोष, निराशा और आक्रोश को बढ़ावा देता है।

आँकड़ों के विश्लेषण से यह पाया गया कि सामाजिक संस्थाओं की समग्र भूमिका और युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध विद्यमान है। विशेष रूप से, शिक्षा एवं रोजगार संस्थाओं की भूमिका का युवाओं की आक्रोश की प्रवृत्ति पर अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव पाया गया, जो सामाजिक लक्ष्यों और उपलब्ध अवसरों के बीच असंतुलन की ओर संकेत करता है। परिवार संस्था की भूमिका भी युवाओं के व्यवहार और भावनात्मक स्थिति को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुई, जबकि राजनीतिक संस्थाओं के प्रति युवाओं की धारणा का प्रभाव तुलनात्मक रूप से कम किंतु महत्वपूर्ण पाया गया।

प्रतिगमन विश्लेषण के परिणामों ने यह भी स्पष्ट किया कि सामाजिक संस्थाएँ संयुक्त रूप से युवाओं में आक्रोश की प्रवृत्ति की व्याख्या करने में निर्णायक भूमिका निभाती हैं। यह निष्कर्ष दुर्खीम के नियमहीनता सिद्धांत, मर्टन के तनाव सिद्धांत तथा मार्क्स की अलगाव की अवधारणा के अनुरूप है, जो यह दर्शाते हैं कि संस्थागत असंतुलन और सामाजिक अलगाव युवाओं में आक्रोश को जन्म देते हैं। समग्र रूप से, यह अध्ययन युवाओं की आक्रोश की प्रवृत्ति को एक व्यापक सामाजिक-संरचनात्मक घटना के रूप में स्थापित करता है तथा यह संकेत देता है कि युवाओं की समस्याओं के समाधान के लिए सामाजिक संस्थाओं की भूमिका को सुदृढ़ करना आवश्यक है।

9. अध्ययन की सीमाएँ

यद्यपि प्रस्तुत अध्ययन अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हुआ है, तथापि इसमें कुछ सीमाएँ विद्यमान हैं। प्रस्तुत अध्ययन की निम्नलिखित सीमाएँ हैं—

1. यह अध्ययन एक **सीमित भौगोलिक क्षेत्र** तक केंद्रित है; अतः इसके निष्कर्षों का सामान्यीकरण व्यापक स्तर पर **सावधानीपूर्वक** किया जाना चाहिए।
2. अध्ययन में **नमूना आकार अपेक्षाकृत सीमित (150 उत्तरदाता)** है, जिसके कारण कुछ सूक्ष्म सामाजिक विविधताओं को पूर्णतः समाहित करना संभव नहीं हो सका।
3. आँकड़े मुख्यतः **स्वरिपोर्टेड प्रश्नावली-** पर आधारित हैं, जिनमें उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत धारणा तथा **सामाजिक वांछनीयता(social desirability)** का प्रभाव पड़ने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता।
4. अध्ययन की प्रकृति **क्रॉससेक्शनल-** होने के कारण समय के साथ युवाओं की आक्रोश की प्रवृत्ति में होने वाले परिवर्तनों का विश्लेषण नहीं किया जा सका।
5. शोध में कुछ ऐसे **सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कारक,** जैसे व्यक्तिगत व्यक्तित्व गुण अथवा तात्कालिक सामाजिक घटनाएँ, सम्मिलित नहीं किए जा सके, जो युवाओं की आक्रोश की प्रवृत्ति को प्रभावित कर सकते हैं।

10. संदर्भ सूची

1. PREMIER, L., & LES FACTEURS, E. S. Émile Durkheim (1897).
2. Merton, R. K. (1938). Science and the social order. *Philosophy of science*, *5*(3), 321-337.

3. Parsons, T. (2013). *The social system*. Routledge.
4. Marx, K. (1844). The economic and philosophical manuscripts.
5. Bourdieu, P. (1986). The force of law: Toward a sociology of the juridical field. *Hastings LJ*, *38*, 805.
6. Tucker, K. (1998). Anthony Giddens and modern social theory.
7. Beck, U. (1992). Modern Society as a Risk Society[1]. *The culture and power of knowledge: Inquiries into contemporary societies*, 199.
8. Putnam, R. D. (2000). *Bowling alone: The collapse and revival of American community*. Simon and schuster.
9. Pandey, J., & Singh, P. (2005). Social psychology in India: Social roots and development. *International Journal of Psychology*, *40*(4), 239-253.
10. Beteille, A. (2002). Sociology: Essays on approach and method.
11. Durkheim, É. (1897). Étude de sociologie. *Alcan, Paris*.

*Corresponding Author: Mukta Vats
E-mail: alovelyupguy@gmail.com
Received: 12 September,2025; Accepted: 27 October,2025. Available online: 30 October, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License